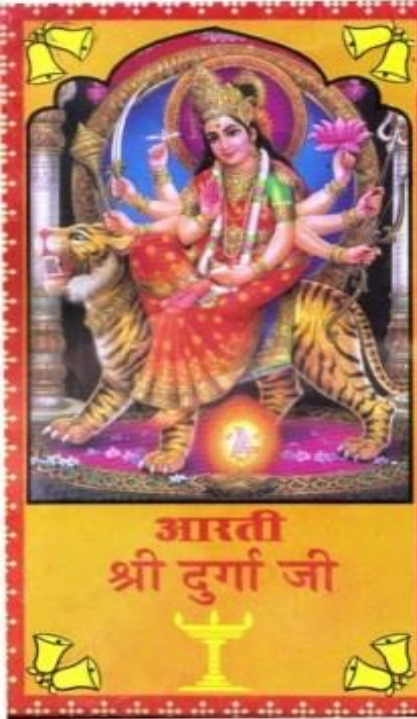


# दुर्गा आरती



जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी। तुमको निशि दिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवरी ॥  
मांग सिंदूर विराजत टीको मृगमद को। उज्ज्वल से दोऊ नैना चन्द्रवदन नीको ॥  
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै। रक्तपुष्प की माला कंठन पर साजै ॥  
केहरि वाहन राजत खड्ग खप्पर धारी। सुर-नर-मुनिजन सेवत तिनके दुखहारी ॥  
कानन कुण्डल शोभित नासाग्रे मोती। कोटिक चन्द्र दिवाकर राजत सम ज्योति ॥  
शम्भु निशुम्भ बिहारे महिषासुर घाती। धूम्र विलोचन नैना निशादिन मदमाती ॥  
चण्ड-मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे। मधु-कैटभ दोऊ मारे, सुर भयहीन करे ॥  
ब्रह्माणी, रुद्राणी, तुम कमला रानी। आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी ॥  
चौंसठ योगिनी गावत नृत्य करत भैरू। बाजत ताल मृदंगा अरु बाजत डमरू ॥  
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता। भक्तन की दुःख हरता, सुख सम्पत्ति करता ॥  
भुजा चार अति शोभित वरमुद्रा धारी। मनवांछित फल पावत सेवत नर नारी ॥  
कंचन थाल विराजत अगर कपूर बाती। श्रीमालकेतु में राजत कोटि रतन ज्योति ॥  
श्री अम्बे की आरती जो कोई नर गावे। कहत शिवानन्द स्वामी सुख-सम्पत्ति पावे ॥

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः, पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः ।  
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जां, तां त्वां नतास्मि परिपालय देवि विश्वम् ॥  
देवी प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य ।  
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्व, त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ॥